UGC CARE LISTED

ISSN 2278-0416

हरिप्रभा

अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्किता त्रैमासिकी शोधपत्रिका

PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS, INDEXED
INTERNATIONAL QUARTERLY RESEARCH JOURNAL (UGC CARE LISTED)

वर्षम् : २०, अङ्क : ४-६, अप्रैल - जून - २०२३

हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठै रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व।
अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः सध्रीचीनो मादयस्वा निषद्य॥
(ऋक् १०/११२/३)

हरियाणा साहित्य-संस्कृति-अकादमी, पञ्चकूला

हरिप्रभा

PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS, INDEXED INTERNATIONAL QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
(UGC-CARE Listed)

अङ्कः-४-६	(अप्रैल-जून, २०२३)	वर्षम्-२०

माननीयः श्री-मनोहरलालः
मुख्यमन्त्री, हरियाणा
अध्यक्षश्च अकादमी

डॉ. कुलदीपचन्द-अग्निहोत्री
कार्यकारी-उपाध्यक्षः
हरियाणा साहित्य-संस्कृति-अकादमी

डॉ. अमितकुमार-अग्रवालः, भा.प्र.से.
सदस्य-सचिवः
हरियाणा साहित्य-संस्कृति-अकादमी

हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
विद्ययाऽमृतमश्नुते

हरियाणा साहित्य-संस्कृति-अकादमी
अकादमीभवनम्, आई.पी-१६, सैक्टर- १४, पञ्चकूला (हरियाणा)

११. मीमांसायाम् अपूर्वविचार:

-श्री. राजेशकुमारगुर्जर: ८७

१२. जैनदर्शनालोके सम्यग्दर्शनस्य स्वरूपविमर्श:

-ऋषभ-जैन ९१

१३. महाभारते गीतावैविध्यम्

-डॉ. अशोक कुमार शतपथी ९८

१४. प्रकाशानन्दस्य व्यक्तित्वं कृतित्वञ्च

-गवीश: द्विवेदी १०५

*****

'हरिप्रभा' वर्षम्-२०, अङ्कः-४-६ (२०२३) ISSN 2278-0416

मीमांसायाम् अपूर्वविचारः

*श्री. राजेशकुमारगुर्जरः

वेदेन स्वर्गादिफलं यागादिना जन्यते इत्युक्तम्। परं यागादिकम् आशुतरविनाशि भवति। स्वर्गस्तु कालान्तरे उत्पद्यते। अतः श्रुतकरणत्वस्य निर्वाहाय यागजन्यं फलजनकं फलोत्पत्तिपर्यन्तम् अवस्थायि अपूर्व विधिना आक्षिप्यते। एवं यागानन्तरं फलप्राप्तिपर्यन्तं विद्यमानः कश्चित् शक्तिविशेषः तत्र कल्प्यः। तत् कल्प्यते चेदपि यागस्वर्गयोः साध्यसाधनभावः व्याहन्यते। तथैव तं शक्तिविशेषं यागे कल्पयितुं न शक्यते। यतोहि प्रत्यक्षेणैव तस्य नाशात्। एवमत्र शक्तिस्तु कल्प्यः, यागध्वंसस्यैव व्यापारत्वेन तत्कल्पनं लाघवमिति न च वक्तव्यम्। लाघवं चेदपि तस्य फले अन्वयानुपपत्तिः, सिद्धान्तविरोधश्च। तस्मात् यागान्तरं फलप्राप्तिपर्यन्तं विद्यमानः कश्चित् शक्तिविशेषः व्यापारत्वेन कल्प्यते। तदेव अपूर्वमिति नाम्ना व्यपदिश्यते।

यागः ⟶ अपूर्वम् ⟶ फलम्

अपूर्वम्- यागजन्यः फलजनकः अवान्तरव्यापारः।

उक्तञ्च-

कर्मणः प्रागयोग्यस्य कर्मणः पुरुषस्य वा।
योग्यता शास्त्रगम्या या परा सापूर्वमुच्यते॥

यागानन्तरं फलप्राप्तिपर्यन्तम् अपूर्वशक्तिविशेषः कल्प्यते चेदपि फलयागयोः साध्यसाधनभावः न हीयते। अपूर्वरूपा यागिकीशक्तिः फलमुत्पादयति इत्यङ्गीकारात्। तत्तु यजमानात्मनि फलप्राप्तिपर्यन्तमवस्थाय तदनन्तरं नश्यति। यथा-

लोकेऽपि अङ्गारादिजन्यमौष्ण्यं शान्तेष्वपि जले औष्ण्यम् अनुवर्तते। तथा यजमानेन अनुष्ठितः यागः नष्टः चेदपि तद् यागजन्यमपूर्वं यजमानात्मनि अनुवर्तते एव। अपूर्वमिदं यागरूपकर्मणः फलोत्पादकशक्तिरेव न पृथग्भूतं स्वतन्त्रं वस्त्वन्तरम्। किन्तु यागरूपकर्मणः फलोत्पादकशक्तिरेव। तदुक्तं वार्तिके-

---

* सहायकाचार्य, मीमांसाविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली।

हरिप्रभा

PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS, INDEXED
INTERNATIONAL QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
(UGC CARE Listed)

अङ्कः-१-३ (जनवरी-मार्च, २०२४) वर्षम्-२१

माननीयः श्री-नायब-सिंह-सैनी
मुख्यमन्त्री, हरियाणा
अध्यक्षश्च अकादमी
डॉ. कुलदीपचन्द-अग्निहोत्री
कार्यकारी-उपाध्यक्षः
हरियाणा-साहित्य-संस्कृति-अकादमी
श्री-मनदीप-सिंह-बराड़ः, भा.प्र.से.
सदस्य-सचिवः
हरियाणा-साहित्य-संस्कृति-अकादमी
डॉ. कुलदीप-सैनी
अतिरिक्त-सचिवः
हरियाणा-साहित्य-संस्कृति-अकादमी
डॉ. चित्तरञ्जन-दयाल-सिंह-कौशलः
मुख्यसम्पादकः
निदेशकः, संस्कृतप्रकोष्ठः
हरियाणा-साहित्य-संस्कृति-अकादमी

हरियाणा साहित्य-संस्कृति-अकादमी
अकादमीभवनम्, आई.पी-१६, सैक्टर- १४, पञ्चकूला (हरियाणा)

अनुक्रमणिका

पृष्ठसंख्या

सम्पादकीयम् १

१. महाकविकालिदासदृष्ट्या गिरिराजहिमालयः - एकं विहगावलोकनम् ३

-जगदीश-मालः

-डॉ. स्वपन-मालः

२. महाभारते जीवनदर्शनम् ९

-डॉ. चित्तरञ्जनदयालसिंह कौशल

३. दर्शनसंग्रहग्रन्थेषु सर्वमतसंग्रहः - एकं विवेचनम् १९

-डॉ. नीलम शर्मा

४. पाणिनीयतन्त्रे लाघवविधानम् ३०

-डॉ. लेखरामः दन्नाना

५. षडास्तिकदर्शनेषूत्तरमीमांसायाः प्रामुख्यम् ४१

-डॉ. आलोककुमारसेमवालः

६. ''जैमिनिदृशा वेदवाक्यानां विभजनम्'' ४७

-राजेश कुमार गुर्जरः

७. ''साधकतमं करणम्'' इति सूत्रस्य समीक्षा ५२

-डॉ. मलयपोडे

८. तात्पर्यस्वरूपविमर्शः ५९

-डॉ. राजकुमारमिश्रः

९. दिनकर्यनुसारं तात्पर्यपदार्थसमीक्षा ६७

-राज्यगुरु जयदेवः धीरुभाई

'हरिप्रभा' वर्षम्-२१, अङ्कः-१-३ (२०२४) ISSN 2278-0416

जैमिनिदृशा वेदवाक्यानां विभजनम्

***राजेश कुमार गुर्जरः**

''वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्म'' इति धर्मलक्षणसन्दर्भे वेदप्रतिपाद्यः इति पदं श्रूयते। तत्र वेदशब्दस्य कोऽर्थः इति विचारे सति **''अपौरुषेयं वाक्यं वेदः''** इत्युक्तम्। अत्र तावत् वेदापौरुषेयत्वविषये विचारः क्रियते। किं वेदः अपौरुषेयो अथवा पौरुषेयः इति। वेदः खल्वस्माकं ज्ञानविज्ञानयोरादिमं स्रोतः। अतऽएव सर्वविदिते महत्त्वे किमपि कथनं दिवा प्रज्वालनम्। तत्र वेदः पौरुषेयः इति नैयायिकानां पक्षः। तेषामनुमानस्य अयं प्रकारः-वेदः पौरुषेयः, वाक्यत्वात् महाभारतादिवाक्यवत् भिन्नानां पुरुषाणां कृतिरिति केषाञ्चिद् मतम्। यानि वेदभागानां काठक-कौथुम-कलापकादीन्यभि-धानानि सन्ति तानि कर्त्ररचितानि सन्ति अर्थात् कठकलापादिभिराचार्यैः ते भागाः रचिता इति।

परमत्र सिद्धान्तस्तु एवं वर्तते यत् एतावतो अक्षय्यस्य ज्ञानराशेः रचना केनापि पुरुषविशेषेण सम्भाव्यो नास्ति। इदं लोकसिद्धं यथा अद्यत्वे कमपि वेदज्ञं वेदाध्ययन विषये यदि पृच्छामश्चेत् स स्वकीयां गुरुपरम्परां वर्णयति। तदैव श्लोकवार्तिके उक्तम्-

वेदाध्ययनं सर्वं गुर्वध्ययनपूर्वकम्।
वेदाध्ययन सामान्याद् अधुनाध्ययनं यथा।।[१]

इत्यादिना वेदापौरुषेयत्वस्य साधितत्वात् यः कल्पः स कल्पपूर्वः इति न्यायेन संसारस्यानादित्वात् ईश्वरस्य च सर्वज्ञत्वात् ईश्वरो गतकल्पीयं वेदमस्मिन् कल्पे स्मृत्वा उपदिशति इत्येतावतैवोपयतौ प्रमाणान्तरेणार्थमुपलभ्य रचितत्व कल्पनानुपपत्तेश्च। ततश्च पुरुषाभावात् शब्दनिष्ठैव सा।

तत्र वेदो द्विविधः-मन्त्ररूपो ब्राह्मणरूपश्चेति। तत्र प्रयोगकालीनार्थस्मरणहेतुतया मन्त्राणामुपयोगः। प्रयोगोऽनुष्ठानं तत्कालीनेत्यर्थः। विधायकं वाक्यं ब्राह्मणम्। ब्राह्मणवाक्यं

*** सहायकाचार्य, मीमांसाविभागः, श्री.ला.ब.शा.रा.सं.वि.नई दिल्ली- ११००१६**

१. श्लोकवार्तिकम्- १/१/६

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research
(In: Sanskrit, Hindi and English Language)
2454 9177

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

हमारे बारे में

"National Journal of Hindi & Sanskrit Research" में हम हिंदी और संस्कृत साहित्य के शोधार्थियों और अध्येताओं के शोध-पत्र आमंत्रित करतें हैं. इस शोध-पत्रिका में हम उत्कृष्ट शोध-पत्रों को ही वरीयता देतें हैं.

Read More >>

सामान्य निर्देश

शोध-पत्र लिखते समय संदर्भों का स्पष्ट उल्लेख करें. पुस्तक का संदर्भ, पत्र-पत्रिका का सन्दर्भ, प्रकाशन वर्ष एवं संस्करण का अंकित होना अनिवार्य है. शोध-पत्र पूर्ण रूप से मौलिक होना चाहिए. जिसका घोषणा-पत्र संलग्न होना चाहिए अन्यथा पत्र पर कोई गौर नहीं किया जायेगा.

Read More >>

सम्पादकीय परिषद्

प्रकाशन से पहले हर शोध पत्र की गुणवत्ता और मौलिकता हमारे अति अर्हता प्राप्त सम्पादकीय परिषद् द्वारा किया जाता है. किसी भी शोध पत्र का प्रकाशित होना या ना हो पाना परिषद् के सदस्यों के निर्णय के ऊपर आधारित और सर्व मान्य होगा. इस से सम्बंधित किसी भी आपत्ति पर कोई पुनर्विचार नहीं किया जाएगा.

Read More >>

शोध क्षेत्र

Sanskrit Studies Jyotiṡh Shāstra Ancient Indian Sciences Pauranic Literatures Vedic Studies Prakrit and Pali Literature Navya Nyaya Language Buddhist and Jain literature Indian Philosophy

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research
(In: Sanskrit, Hindi and English Language)
ISSN No 2454 - 9177
Impact Factor (RJIF) 7.2
[illegible]
[illegible]
Download Kruti Dev Font

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

<- Previous Volume | Volume 52 (January – February , 2024) | Next Volume ->

S. No.	Manuscript Title & Author	Page No.	Read Article	Language
1	रामायणकाव्यस्य अखण्डप्रभावः Dr. T. Venkateswarlu	01-04		Sanskrit
2	मीमांसा दर्शन का परिचय एवं आवश्यकता राजेश कुमार गुर्जर	05-09		Hindi
3	हिंदी उपन्यासों में पंजाबी भाषा शैली चंदा रानी	10-13		Hindi
4	माध्यमिकस्तरीयच्छात्रेषु सामाजिकसमायोजनसम्बन्धीसमस्याः परामर्शाश्च मधुकरप्रसादपाण्डेयः, डॉ पिंकी मलिक	14-17		Sanskrit
5	"सुशीला टाकभौरे और शांताबाई कांबले की आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन" तोंडचिरकर मीना बाबुराव, प्रो.राजू एस. बागलकोट	18-19		Hindi

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Online, Peer Reviewed Journal, Impact Factor (RJIF): 5.11, ISSN NO. : 2454-9177

Publication Certificate

This certificate confirms that " राजेश कुमार गुर्जर " has published article titled " मीमांसा दर्शन का परिचय एवं आवश्यकता ".

Details of Published Article as follow:

Volume : 52

Issue : January - February

Year : 2024

Page No. : 05- 09

Yours Sincerely,

Anil Aggarwal
Publisher
National Journal of Hindi & Sanskrit Research
Web: www.sanskritarticle.com

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024 1(52): 05-09
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

राजेश कुमार गुर्जर
सहायकाचार्य, मीमांसादर्शन,
(दर्शनसंकाय) श्री.ला.ब.शा.रा.संस्कृत-
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Correspondence:
राजेश कुमार गुर्जर
सहायकाचार्य, मीमांसादर्शन,
(दर्शनसंकाय) श्री.ला.ब.शा.रा.संस्कृत-
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

मीमांसा दर्शन का परिचय एवं आवश्यकता

राजेश कुमार गुर्जर

विशुद्ध ज्ञानदेहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे।
श्रेयः प्राप्ति निमित्तायः नमः सोमार्द्ध धारिणे।।

"दर्शन" पद का सामान्य अर्थ यह बताया गया है, जिसके द्वारा जीवात्मा, परमात्मा, और जगत इन तीनों पदार्थों का ज्ञान हो उसे दर्शन कहा गया है। सामान्य रूप से दर्शन को दो मुख्य भागों में विभक्त किया हुआ है। जो वेद को प्रमाण के रूप में स्वीकार करते है उसे आस्तिक दर्शन तथा जो वेद को प्रमाण नहीं मानते है, उसे नास्तिक दर्शन कहा गया आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों का विभाजन निम्न प्रकार से है।

आस्तिक	नास्तिक
सांख्यदर्शन	जैनदर्शन
योगदर्शन	बौद्धदर्शन
न्यायदर्शन	चार्वाकदर्शन
वैशेषिक दर्शन	-
मीमांसादर्शन	-
वेदान्तदर्शन	-

मीमांसाशब्दार्थ-

"मीमांसा" पद का अर्थ पूजित विचार है। "मान पूजायाम्" अर्थात् पूजार्थक 'मान' धातु से जिज्ञासार्थ सन् प्रत्यय करने से मीमांसा पद की निष्पत्ति हुई है। जिज्ञासा तो किसी पुरुष विशेष के द्वारा नहीं की जा सकती है, स्वयं होती है। अतः 'विचार करने के लिए' इस प्रकार की लक्षणा यहाँ स्वीकार की जाती है। वेद ही धर्म में प्रमाण माना गया है। धर्माधर्म के विचार के लिए उन वेद वाक्यों का विचार किया जाने से मीमांसा का पूजितार्थ सम्भव है।

मीमांसा- मान + सन्

पूजित जिज्ञासा- पूजितविचार

मीमांसा का उदय-

चराचर जगत में केवल मानव मात्र ही मनन प्रधान प्राणी है। चिन्तन मनन शक्ति ही मानव को पशुभाव से अलग करती है। इतिहास से ज्ञात होता है कि विवेकशून्य मानव उस आदिकाल में पशुप्रकारों में से एक था। जैसे जैसे विवेक एवं बुद्धि का उदय हुआ वैसे वैसे मानव विकास के मार्ग पर उत्कृष्टता को प्राप्त होता गया। इसलिए विचारारम्भ ही मानवता का आरम्भ माना है। विचारविमर्श का इतिहास ही मानवता का इतिहास माना जा सकता है। यह विचार ही सहस्त्र संवत्सरों की अनुभूति से परिपक्व होकर दृढ़ता के स्वरूप को प्राप्त करता है, तो आचार के रूप में परिणमित होता है। जिसको भारतीय परम्परा में प्रथमकर्तव्य के रूप में स्वीकार किया है। विचार की सत्यसमन्वित कोटि आगम

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research
(In Sanskrit, Hindi and English Language)

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

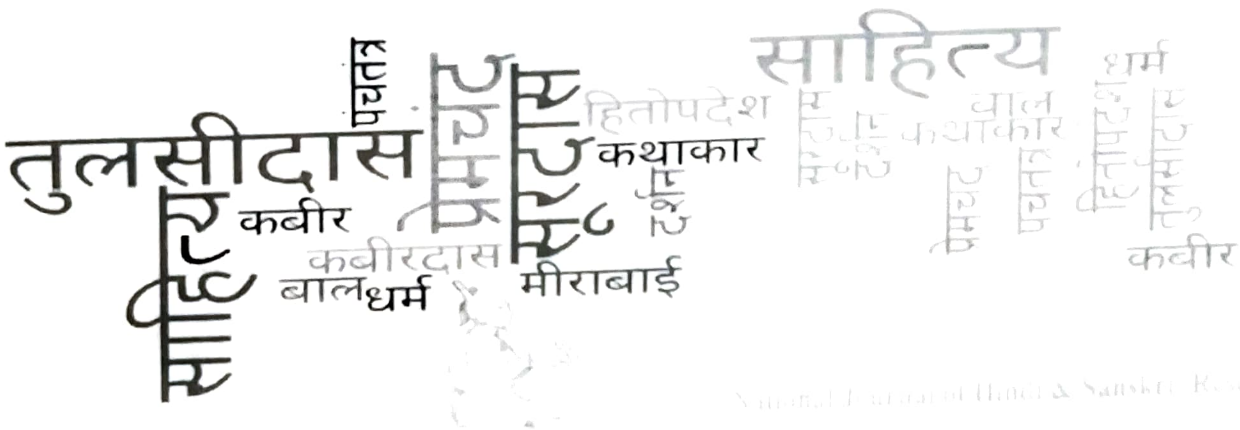

हमारे बारे में

"National Journal of Hindi & Sanskrit Research" में हम हिंदी और संस्कृत साहित्य के शोधार्थियों और अध्येताओं के शोध-पत्र आमंत्रित करतें हैं. इस शोध-पत्रिका में हम उत्कृष्ट शोध-पत्रों को ही वरीयता देते हैं.

Read More >>

सामान्य निर्देश

शोध-पत्र लिखते समय संदर्भों का स्पष्ट उल्लेख करें. पुस्तक का संदर्भ, पत्र-पत्रिका का सन्दर्भ, प्रकाशन वर्ष एवं संस्करण का अंकित होना अनिवार्य है. शोध-पत्र पूर्ण रूप से मौलिक होना चाहिए. जिसका घोषणा-पत्र संलग्न होना चाहिए अन्यथा पत्र पर कोई गौर नहीं किया जायेगा.

Read More >>

सम्पादकीय परिषद

प्रकाशन से पहले हर शोध पत्र की गुणवत्ता और मौलिकता हमारे अति अर्हता प्राप्त सम्पादकीय परिषद द्वारा किया जाता है. किसी भी शोध पत्र का प्रकाशित होना या ना हो पाना परिषद् के सदस्यों के निर्णय के ऊपर आधारित और सर्व मान्य होगा. इस से सम्बंधित किसी भी आपत्ति पर कोई पुनर्विचार नहीं किया जाएगा.

Read More >>

शोध क्षेत्र

Sanskrit Studies Jyotish Shâstra Ancient Indian Sciences Pauranic Literatures Vedic Studies Prakrit and Pali Literature Navya Nyaya Language Buddhist and Jain literature Indian Philosophy

28	विशिष्टाद्वैतमते आकाशस्य ब्रह्मशब्दवाच्यत्वम् यु.कृष्णवेणी	96-97		Sanskrit
29	अनुसन्धातुः योग्यताः गिरीशभट्टः बि	98-101		Sanskrit
30	संस्कारस्य सामाजिकदृष्टिकोणः मदनमुग्रीः	102-105		Sanskrit
31	फलितज्योतिषे गणितशास्त्रम् Dr.Muralisham H	106-107		Sanskrit
32	जीवन्धरचम्पूकाव्ये शान्तरसः जि. सुनील् गवास्कर्	108-110		Sanskrit
33	संस्कृत वाङ्मय में याज्ञवल्क्यस्मृति का दायविभाग में योगदान दीपक कुमारी, डॉ. दीप लता	111-114		Hindi
34	स्वस्थवृत्त में प्राणायाम की उपादेयता : एक शास्त्रीय विवेचन महाबीर शुक्ल, विनोद पटेल, प्रदीप कुमार मिश्रा, प्रो. नीरू नत्थानी	115-119		Hindi
35	ज्यौतिषे राजयोगसमीक्षा Dr. A.V. Kiran	120-121		Sanskrit
36	मीमांसादर्शने मन्त्रविनियोगः राजेश कुमार गुर्जर	122-124		Sanskrit
37	न्यायवैशेषिकशास्त्रदृष्ट्या पदार्थतत्त्वम् – एकं समीक्षणम् तिथि-नस्करः	125-129		Sanskrit
38	रघुकुलकथावल्लीमहाकाव्यस्य प्राकृतिक-सामाजिक-सौन्दर्यवर्णनम् तरुणमण्डलः	130-131		Sanskrit

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Online, Peer Reviewed Journal, Impact Factor (RJIF): 5.11, ISSN NO. : 2454-9177

Publication Certificate

This certificate confirms that " राजेश कुमार गुर्जर " has published article titled " मीमांसादर्शने मन्त्रविनियोगः ".

Details of Published Article as follow:

Volume : 51

Issue : November - December

Year : 2023

Page No. : 122- 124

Yours Sincerely,

अनिल अग्रवाल

Anil Aggarwal
Publisher
National Journal of Hindi & Sanskrit Research
Web: www.sanskritarticle.com

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(51): 122-124
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

राजेश कुमार गुर्जर
सहायकाचार्य, मीमांसादर्शन(दर्शनसंकाय),
श्री.ला.ब.शा.रा.संस्कृतविश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

Correspondence:
राजेश कुमार गुर्जर
सहायकाचार्य, मीमांसादर्शन(दर्शनसंकाय),
श्री.ला.ब.शा.रा.संस्कृतविश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

मीमांसादर्शने मन्त्रविनियोगः

राजेश कुमार गुर्जर

वेदः द्विधा विभक्तः मन्त्ररूपो ब्राह्मणश्चेति। तत्र प्रयोगकालीनार्थस्मरणहेतुतया मन्त्राणामुपयोगः। प्रयोगोऽनुष्ठानं तत्कालीनेत्यर्थः। विधायकं वाक्यं ब्राह्मणम्, ब्राह्मणवाक्यञ्चानेकविधं यथा कर्मोत्पत्ति-वाक्यं, गुणवाक्यं, फलवाक्यं, फलायगुणवाक्यं, सगुणकर्मोत्पत्तिवाक्यमित्यादिभेदात्। वेदे तावत् अनेक-प्रकारकानि वेदवाक्यानि उपलभ्यन्ते तदनु वेदः पञ्चधा विभक्तः-

"स च वेदो विधिमन्त्रनामधेयनिषेधार्थवादात्मकः"।।

तत्र प्रयोगसमवेतार्थस्मारकः मन्त्रः। मन्त्रः अनुष्ठानोपयोगिककर्मज्ञानं जनयति। प्रयोगः नाम कर्मणामनुष्ठानम्। यः वेदभागः कर्मणामनुष्ठानसम्बद्धज्ञानं जनयति सः मन्त्रः। मन्त्रः अनुष्ठेयकर्मणः ज्ञानं सम्पादयति इत्यतः सप्रयोजनः। अनुष्ठानकाले मन्त्राणाम् उच्चारणम् अदृष्टार्थं न क्रियते, अपितु अर्ज्ञानरूप दृष्टं फलमिति वक्तव्यम्। मन्त्रानां पठनम् अदृष्टार्थं क्रियते इति उच्यमाने-

"दृष्टे सम्भवति अदृष्टस्य कल्पनम् अन्याय्यम्"।

इति न्यायविरोधः सम्भवति। अतः उच्चरितस्य मन्त्रस्य फलम् अर्थज्ञानम् इति मीमांसासिद्धान्तः। तर्हि मन्त्रोच्चारणस्य फलम् अर्थज्ञानमिति यदुक्तम् तत् यदि उपदेष्टुं वचसा लिखितपाठेन वा अन्येन प्रकारेण सम्भवति। मन्त्रोच्चारणमात्रेण अर्थज्ञानं सम्पादनीयम् इति नास्ति। अतः अनुष्ठानकाले मन्त्राणां पठनं व्यर्थं खलु इति। "मन्त्रैरेव स्मर्तव्यम्" इति नियमविधेः आश्रयमणात् अनुष्ठानावसरे क्रियमाणं मन्त्रोच्चारणं व्यर्थं न भवति।

यदि मन्त्रार्थप्रत्यायनायानार्थको भवतीति कौत्सः। **"अनर्थका हि मन्त्राः"**[1] इति मन्त्रा अनर्थका, उच्चारणमात्रेण यज्ञोपकारकाः भवन्ति इति पूर्वपक्षिणामभिप्रायः। मन्त्राधिकरणे इदं निरूपितम्-अथेदानीं किं विवक्षितवचनाः मन्त्रा, उत् अविवक्षितवचनाः। किमर्थप्रकाशनेन यागमुपकुर्वन्ति, उत उच्चारणमात्रेणेति? यद्युच्चारणमात्रेण, तदा न नियोगतो "बर्हिर्देवसदनं दामि" इत्येष बर्हिर्लवने विनियुज्यते।

अभिदानेन चेत् प्रकरणेन विज्ञाताङ्गभावो नान्यत्रोपकर्तुं शक्नोति। इत्यन्तरेणापि वचनं बर्हिर्लवन एव विनियुज्यते। तदेवमवगच्छामः। उच्चारणमात्रेणैवोपकुर्वतीति। कुतः इति चेत् सूत्रमुच्यते-

"तदर्थशास्त्रात्"[2]

यदर्थभिधानसमर्थो मन्त्रस्तत्रैवैनं शास्त्रं निबध्नाति। **"उरुप्रथा उरु प्रथस्वेति पुरोडाशं प्रथयति"**[3] वचनमिदमनर्थकम्, यद्यर्थाभिधानेनोपकुर्वन्ति। अथोच्चारणमात्रेण, ततो वक्तव्यो विनियोगः उक्तश्च। अतो नाऽर्थाभिधानेन। यथा साक्षः पुरुषः परेण चेन्जीयते, नूनमक्षिभ्यां न पश्यति इति गम्यते। ननु अर्थवादार्थं भविष्यतीति चेत् न हि येन् विधीयते तस्य वाक्यशेषो अर्थवाद इत्युक्तम्। अतो न अर्थवादार्थं वचनम्। द्वितीय हेतुः **"वाक्यनियमात्"**[4] नियतपदक्रमा हि मन्त्राः भवन्ति। **"अग्निर्मूर्धा दिवः"**[5] इति न विपर्ययेण। यद्यर्थप्रत्यायनार्थाः, विपर्ययेणाप्यर्थः प्रतीयते इति नियमोऽनर्थकं स्यात्।